10

प्रयाग-पथ

अमृतराय पर विशेष

सत्यजित राय : एक बहुआयामी व्यक्तित्व

पवन कुमार

20वीं सदी के विश्व के सर्वोत्तम फिल्म निर्देशकों में से एक हैं- सत्यजित राय। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी ख्याति एक विशिष्ट फिल्म निर्देशक की रही है। उन्होंने अपने फिल्मी कैरियर में 37 फिल्मों का निर्देशन किया, जिनमें फीचर फिल्में, वृत्तचित्र और लघु फिल्में आदि शामिल हैं। यद्यपि उनकी पहचान एक फिल्म निर्देशक के रूप में रही है किन्तु सत्यजित राय की यह भी एक खासियत थी कि वे अपनी फिल्मों से सम्बन्धित कई काम स्वयं करते थे जैसे पटकथा लेखन, पार्श्व संगीत लेखन, चलचित्रण, कला निर्देशन संपादन, प्रचार सामग्री बनाना इत्यादि। मात्र फिल्मों से ही नहीं बल्कि कला के हर एक विस्तार तक उनकी पहुँच थी। फिल्मों के अलावा भी कई कलात्मक गतिविधियों से वे ताउम्र जुड़े रहे। वस्तुतः वे एक सम्पूर्ण कलाकार थे, उनमें कला की बारीकियों का समझने का अद्‌भुत हुनर था। वे एक श्रेष्ठ फिल्म निर्देशक होने के अतिरिक्त एक उच्चकोटि के चित्रकार, कहानीकार, संगीतज्ञ तथा साहित्य की बेहतर समझ रखने वाले व्यक्ति थे। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की जड़ें उनके पारिवारिक माहौल में तलाश की जा सकती हैं। एक फिल्मकार के रूप में तो उनकी चर्चा होती ही रहती है। फिलहाल हम सत्यजित राय के उस रूप की चर्चा कर रहे हैं जो फिल्मों से हटकर है, जो उनके व्यक्तित्व को वैराट्य प्रदान करता है।

सत्यजित राय का जन्म कलकता के एक बंगाली अहीर परिवार में हुआ था, जो कला एवं साहित्य के लिए पहले से ही जाना जाता था। उनके दादा उपेन्द्र किशोर राय चौधरी लेखक, चित्रकार, दार्शनिक, प्रकाशक, खगोलशास्त्री, ब्रह्मसमाजी भी थे। उनके पिता सुकुमार राय भी एक कवि थे, जिन्होने बंगाली भाषा में गैर परम्परागत कविताएं लिखीं। राय की कल्पनाशक्ति को पर्याप्त विस्तार तब मिला जब वे प्रसिडेंसी कालेज और तत्पश्चात् विश्व भारती विश्वविद्यालय गए। सत्यजित राय ने प्रेसिडेंसी कालेज से अर्थशास्त्र पढ़ा था लेकिन उनकी अभिरुचि तो लोककलाओं और ललित कलाओं की ओर थी, सो वे विश्व भारती विश्वविद्यालय आ गए। हालांकि विश्व भारती के बौद्धिक परिवेश से तो वे बहुत प्रभावित नहीं हुए लेकिन वे यहां के कला संकाय से काफी प्रभावित हुए। नन्द लाल बोस और बिनोद बिहारी मुखर्जी जैसे चित्रकारों से उन्होंने बहुत कुछ सीखा। सम्भवतः इसी कारण सत्यजित राय ने अपने कैरियर की शुरूआत पेशेवर चित्रकार के रूप में की। नन्द लाल बोस से उन्होंने चित्रकला की बारीकियाँ समझीं। चित्रकार बिनोद बिहारी मुखर्जी से भी वे काफी प्रभावित थे। बिनोद बिहारी मुखर्जी के जीवन पर तो उन्होने बाद में एक डाक्यूमेंट्री **'द इनर आई'** भी बनाई।

1943 में शान्ति निकेतन छोड़ने के बाद वे एक ब्रिटिश विज्ञापन कम्पनी से जुड़ गए। वे

'जूनियर विजुलाइजर' के रूप में कार्य करते थे। उन्होने 'सिग्नेट प्रेस' में भी काम किया जहां वे छपने वाली किताबों के आवरण पृष्ठों की डिजाइनिंग करते थे। यह काम उन्हें बहुत पसंद था। बहुत कम लोगों को पता होगा कि सत्यजित राय ने जिम कार्बेट की Man-eaters of Kumaon व जवाहर लाल नेहरू की Discovery Of India के कवर पेज रचे थे। 'पथेर पांचाली' उपन्यास के लिए भी उन्होंने मुखपृष्ठ डिजाइन किया और अन्दर के चित्र भी बनाए।

सत्यजित राय की कल्पनाशीलता और मौलिकता का उदाहरण यह रहा कि उन्होंने दो नए फॉन्ट का भी अविष्कार किया- राय रोमन और राय बिज़ार।

वे एक अच्छे कहानीकार भी थे। अपने कथानकों को गढ़ने के लिए वे अमूमन दार्जिलिंग या पुरी चले जाते थे, जहां कोलाहल से दूर रहकर अपना सृजनात्मक कार्य करते थे।

बांग्ला साहित्य पर उनकी पकड़ अत्यन्त गहरी थी। उनकी अधिकांश फिल्में बांग्ला साहित्य से प्रेरित थी। उनकी पहली फिल्म 'पथेर पांचाली' थी जो विभूति भूषण बंधोपाध्याय के उपन्यास पर आधारित थी। उनकी कई फिल्में बांग्ला साहित्य से तो प्रेरित थी ही, विश्व की अन्य भाषाओं के साहित्य की भी समझ उन्हें थी। उन्होंने मुंशी प्रेमचन्द की कहानी पर आधारित 'शतरंज के खिलाड़ी' बनाई। सद्गति भी इसी श्रेणी की एक और फिल्म थी जो मुंशी प्रेमचन्द की कहानी पर आधारित थी। प्रेमचन्द पर इस गंभीरता से तो कोई हिन्दी फिल्मकार भी फिल्म न बना सका। राय ने अपने दादा की लिखी एक कहानी 'गुपी गाइन बाघा बाइन' पर एक फिल्म बनाई जो आपातकालीन भारत की परिस्थितियों को प्रकट करती है।

महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर उन्होंने 1961 में एक वृत्तचित्र बनाया। यह वृत्तचित्र इसलिए महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि ठाकुर के जीवन का फिल्मांकन काफी कम हुआ था इसलिए इस वृत्तचित्र में स्टिल फोटोज का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया। स्वयं सत्यजित राय का मानना था कि इस वृत्तचित्र को बनाने में तीन फीचर फिल्मों के बराबर परिश्रम लगा है।

उन्होंने 1961 में ही सुभाष मुखोपाध्याय और अन्य लेखकों के साथ मिलकर 'संदेश' नामक बाल पत्रिका को पुनर्प्रकाशन आरम्भ किया। इस पत्रिका में वे न केवल लिखते थे बल्कि प्रकाशित होने वाली कहानियों के चित्र भी बनाते थे। 1962 में उन्होंने 'संदेश' के लिए 'बाँकुबाबुर बन्धु' कहानी लिखी। 1967 में उन्होंने 'The Alien' नामक कथानक लिखा। मजे की बात यह है कि इस कथानक का प्रकाशनाधिकार किसी और ने छीन लिया। अमेरिका के साथ मिलकर इस कथानक पर फिल्म बनाने का काम भी शुरू हुआ लेकिन यह परियोजना अपूर्ण रह गयी। 1970 में उन्होंने अपनी दो लोकप्रिय कहानियों 'सोनार केलना' (सोने का किला) और जॉय बाबा फेलुनाथ का फिल्मांकन किया। दोनों फिल्में बच्चों और बड़ों में समान रूप से लोकप्रिय रहीं। 'जहांगीर की स्वर्णमुडा' उनकी कहानियों का महत्वपूर्ण संग्रह है। इन कहानियों में उन्होंने मानव जीवन के सुख और दुःखों का अपने नज़रिए से बहुत बारीक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनके लेखन में व्यंग्य का भी हल्के से छोंके की झलक मिलती है। मुल्ला नसीरूद्दीन की कहानियों का चयन कर उनका चित्रण भी सत्यजित राय ने किया। 'सोने का किला' उनका उपन्यास है जो किशोर पाठकों के लिए है। यह उपन्यास एक ऐसे किशोर नायक की कथा है जिसे अपने पूर्वजन्म की बातें याद रहती हैं। उसे यह याद रहता है कि पूर्वजन्म में वह जहां रहता था, वहां सोने का एक खज़ाना था। रहस्य और रोमांच से भरपूर इस उपन्यास में एक और पात्र है 'फेलू दा'। 'फेलू दा' वह चरित्र है जिसे सत्यजित राय ने गढ़ा था। 'फेलू दा' एक जासूस है। खजाने की खोज के बहाने सत्यजित राय ने अपने किशोर पाठकों का अत्यन्त

आकर्षक भाषा में राजस्थान के किशनगढ़, बीकानेर, जोधपुर, पोकरण, जैसलमेर जैसे शहरों का मनोहारी वर्णन किया है।

सत्यजित राय को पहेलियों और बहुअर्थी शब्दों से बहुत प्रेम था। 'फेलू दा' के बहाने उन्होंने अपने इस शौक को प्रस्तुत किया है। इस चरित्र की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि बी बी सी ने उनके इस किरदार की दो कहानियों को अपने रेडियो प्रोग्राम में शामिल किया। 'फेलू दा' को देशी शरलॉक होम्स की तरह है। ऐसे ही एक और किरदार प्रो0 शंकू को उन्होंने गढ़ा। उनका यह किरदार भी बहुत ही लोकप्रिय हुआ। प्रोफेसर हिजबिजबिज, फ्रिन्स, सदानन्द की छोटी दुनिया, भक्त, झक्की बाबू, सियार देवता, समाद्दार की चाबी, उनकी ऐसी कहानियाँ हैं जो अत्यन्त लोकप्रिय हैं। इनमें से कुछ कहानियों में 'फेलू दा' भी मुख्य पात्र हैं। तोयशी और लाल मोहन गांगुली 'जटायु' भी उनके लोकप्रिय पात्र हैं।

सत्यजित राय की साहित्यिक अभिरुचि उनकी 'घरे बाइरे' फिल्म से भी देखी जा सकती है। यह रवींदनाथ ठाकुर के उपन्यास पर आधारित फिल्म है। उन्होंने हेनरिक इसन के प्रख्यात नाटक 'एन एनिमी ऑफ द पीपल' पर आधारित गणशत्रु फिल्म बनाई।

कौन मानेगा किन्तु सत्य यही है कि आने वाले वर्षों में लेखन ही उनकी जीविका का प्रमुख साधन बन गया। उनके बौद्धिक चरित्र की झलक उनकी फिल्मों में स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। उनकी फिल्में मनोवैज्ञानिक, कल्पनात्मक, वैज्ञानिक, गुप्तचर, ऐतिहासिक, समकालीन विषयों पर आधारित हैं।

सत्यजित राय में नयी तकनीकों की सीखने व आजमाने की अद्भुत ललक थी। सत्यजित के छायाकार सुब्रत मित्र थे। 1966 के बाद जब सुब्रत मित्र से उनकी अनबन हो गयी तो वे अपने फिल्मों के लिए स्वयं ही कैमरा वर्क करने लगे। उन्होंने फ्रांसीसी जाँ लुक गोडार और फ्राँस्वा त्रूफो से भी तकनीकी प्रयोगों को समझा। बतौर लेखक उन्होंने चिनमूल, पाथेर पांचाली, अपराजितों, जलसाघर, अपुर संसार, देवी, तीन कन्या, कंचनजंघा, चारुलता, नायक, संसार, केल्ला, शतंरज के खिलाड़ी, घर-बाइरे, गणशत्रु, सद्गति, आगन्तुक की पटकथाएं लिखीं। 1966 में सत्यजित ने नायक फिल्म का निर्माण किया और इसकी कहानी उन्होंने स्वयं लिखी।

वे अपने कार्य के प्रति किस सीमा तक प्रतिबद्ध थे, इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि उन्होंने लन्दन फिल्म क्लब की सदस्यता ग्रहण कीं और 04 माह के अन्तराल में ही 90 फिल्में देख डालीं। कुछ फिल्में तो उनके दिल में ऐसे बस गयीं कि उनकी दिशा ही बदल गयी। 'बाइसिकल थीव्स' और 'लूसिनिया स्टोरी' ने उनके जीवन की दिशा बदल दी।

जाहिर है कि सत्यजित राय मात्र फिल्मकार ही नहीं थे एक सम्पूर्ण कलाकार थे जो कला को चिन्तन तक ले जाते थे। फिल्म निर्देशक सत्यजित राय के विराट व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं किन्तु उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को समझने के तो लिए हमें उनके चित्रकार, लेखक, डिजाइनर, चिन्तक वाले पहलू को भी समझना होगा।

ए-753, इंदिरा नगर, लखनऊ-16 (उ.प्र.) मो.- 9412290079